‘‘ वे कहते हैं कि ज़िन्दगी बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, यहीं हमारा मरना और जीना है और दिनों की गर्दिश के सिवा कोई चीज़ नहीं जो हमें विनष्ट करती हो। वास्तव में इस मामले में इनके पास कोई ज्ञान नहीं है। ये सिर्फ़ अटकल के आधार पर ये बातें करते हैं। और जब हमारी स्पष्ट आयतें इन्हें सुनाई जाती हैं तो इनके पास कोई तर्क इसके सिवा नहीं होता कि उठा लाओ हमारे बाप-दादा को अगर तुम सच्चे हो।’’

(कुरआन 45:24-25)

आख़िरत पर ईमान के द्वारा सच्चा इनसाफ़ और स्पष्ट हो जाता है

ख़ुदा ने तमाम इनसानों को पैदा किया और उन्हें उनके कामों के लिए उत्तरदायी बनाया। दुनिया में हम देखते हैं कि नेक लोग अधिक्तर बदहाल ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, जब्कि बुरे लोग ऐश की ज़िन्दगी गुज़ारते नज़र आते हैं।

निर्दोष लोग अक्सर अपराधियों और अत्याचारियों के हाथों जुल्म का शिकार होते रहते हैं और उन्हें दुनिया में उनके अपराधों के कारण नुक़सान की जगह फ़ायदा ही मिलता नज़र आता है। अगर कोई भविष्य की ऐसी ज़िन्दगी न हो जिसमें नेक लोगों को अच्छा बदला मिले और दुराचारियों को सज़ा, तो फिर इनसाफ़ के कोई मायने नहीं रह जाते। फिर लोगों को अच्छे-बुरे के ज्ञान के साथ पैदा करने और उन्हें उनके उत्तरदायित्व को याद दिलाने के लिए नबियों को भेजने का कोई औचित्य नहीं रह जाता।

“क़ियामत के रोज़ हम ठीक -ठीक तौलनेवाले तराज़ू रख देंगे। फिर किसी शख़्स पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म न होगा। जिसका राई के दाने के बराबर भी कोई कर्म होगा, हम उसे सामने ले आएँगे। और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं।”

(कुरआन 21:47)

अल्लाह सबसे ज्यादा इनसाफ़ पसन्द है वह अपनी पैदा की हुई तमाम जानदार चीज़ों के साथ इनसाफ़ करेगा। और अल्लाह से कोई बच नहीं पाएगा। इसलिए, इस्लाम आख़िरत पर पक्का यक़ीन रखने पर ज़ोर देता है। और यह यक़ीन उतना ही पक्का होना चाहिए जितनी की मौत की हक़ीक़त। इसलिए ख़ुदा की रज़ा को हासिल करना ही हमारी ज़िन्दगी का मक़सद होना चहिए।

(सत्यमार्ग पर चलनेवालों से कहा जाएगा) ऐ सन्तुष्ट आत्मा। चल अपने रब की ओर, इस हाल में कि तु (अपने अच्छे परिणाम से) ख़ुश, (और अपने रब के निकट पसन्दीदा है। शामिल हो जा मेरे (नेक) बन्दों में और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में।

(कुरआन 89:27-30)

सारांश

ऐ इनसान किस चीज़ ने तुझे अपने रब्बे-करीम की तरफ़ से धोखे में डाल दिया। जिसने तुझे पैदा किया, तुझे नख-शिख से दुरुस्त किया, तुझे सन्तुलित बनाया। और जिस सूरत में चाहा तुझको जोड़कर तैयार किया। हरगिज़ नहीं बल्कि (अस्ल बात यह है कि) तुम बदला दिए जाने (पुरस्कार और सज़ा) को झुठलाते हो।’’

(कुरआन 82:6-9)

मौत हर हाल में आनी है। हमारी ज़िन्दगी का मक़सद केवल एक अल्लाह की इबादत करना है। हम अच्छाई के कामों में हिस्सा लें और उन सारे कामों से बचें जिनसे मना किया गया है हमारी क़िसमत का फ़ैसला, हमारे आज के कामों पर आधारित है। अब या तो हम इस अवसर को जन्नत में अपने लिए हमेशा का ठिकाना बनाने के लिए इस्तेमाल कर लें या फिर इसे बर्बाद जाने दें और अपने आपको जहन्नम में हमेशा के अज़ाब के लिए तैयार कर लें।

‘‘निस्सन्देह वफ़ादार लोग नेमतों में होंगे। और निश्चय ही दुराचारी भड़कती हुई आग में ...।’’ (कुरआन, 82 : 13-14)

मौत और मौत के बाद की ज़िन्दगी क़ुरआन की नज़र में

“ ‘‘ हर एक जीव को मौत का मज़ा चखना है।’’(क़ुरआन, 29:57) ”

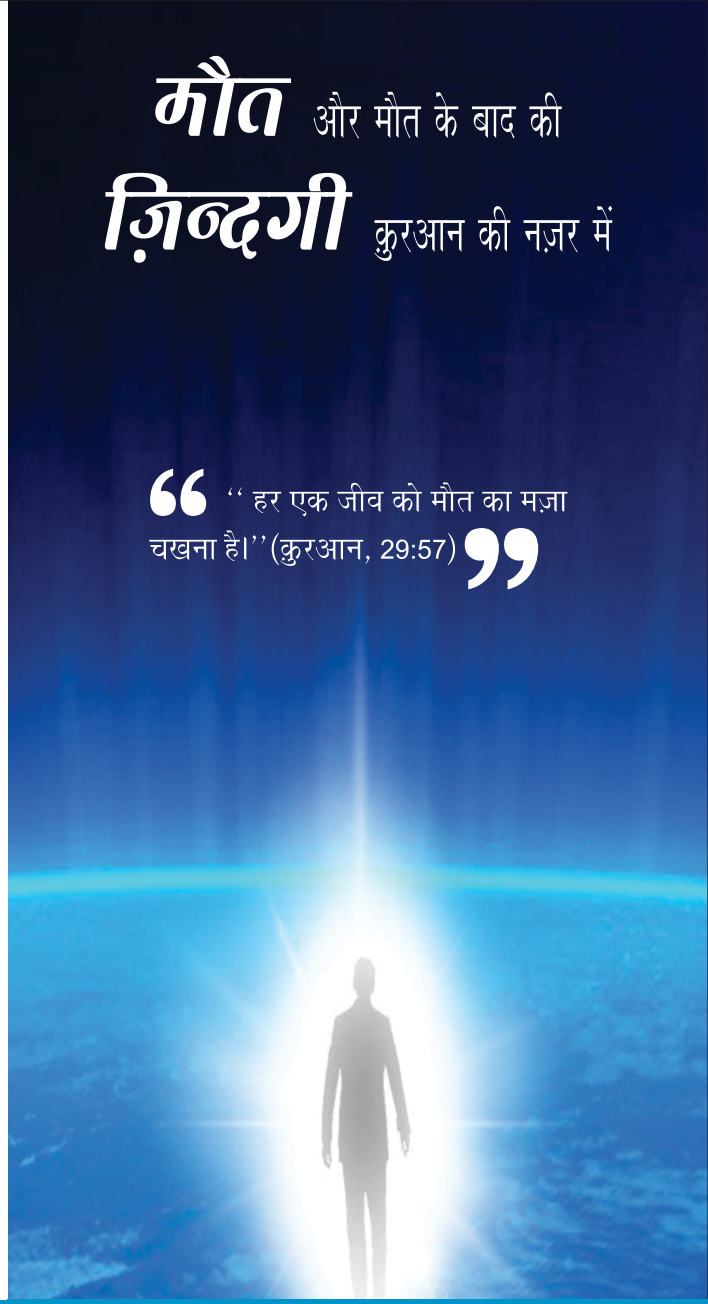

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

(सत्यमार्ग पर चलनेवालों से कहा जाएगा) ''ऐ सन्तुष्ट आत्मा, लौट अपने रब की ओर, इस हाल में कि तू (अपने अच्छे परिणाम से) ख़ुश (और अपने रब के निकट) पसन्दीदा है। अतः मेरे बन्दों में शामिल हो जा। और प्रवेश कर मेरी जन्नत में।''

(कुरआन- 89:27-30)

इस्लाम के अनुसार, किसी व्यक्ति का परलोक या मौत के बाद की ज़िन्दगी, उसकी वर्तमान ज़िन्दगी के अनुसार होगी। मौत के बाद एक नई ज़िन्दगी का आरंभ होगा, जिसके बाद एक घड़ी ऐसी आएगी जब हर इनसान को हिला मारा जाएगा, क्योंकि उन्हें उनकी नियतों, अच्छे और बुरे कामों को सामने ला खड़ा किया जाएगा और फिर देखा जाएगा कि दुनिया में नेक कर्म को अंजाम देने में वे क्यों असफ़ल रहे। इनसाफ़ के दिन (क़ियामत के दिन) तमाम लोगों का (उनकी जवानी से बाद का) रिकॉर्ड अल्लाह के सामने पेश किया जाएगा। अल्लाह हर इनसान के अच्छे और बुरे कर्मों को अपनी रहमत और इनसाफ़ के तराज़ू में तौलते हुए, कुछ लोगों के बहुत-से गुनाहों को माफ़ कर देगा और कुछ लोगों के अच्छे कर्मों को कई गुना बढ़ा कर देगा। जिस किसी की अच्छाइयाँ अधिक होंगी उन्हें उनका अच्छा बदला दिया जाएगा। जब्कि, जिन लोगों के बुरे कामों का पलड़ा नेकियों के मुक़ाबले में भारी होगा उनको सज़ा दी जाएगी। जो लोग उस अदालत में कामयाबी के साथ सफ़ल हो जाएंगे, वे जन्नत में दाख़िल होंगे और हमेंशा रहनेवाले सुख के दरवाज़े उनके लिए खोल दिए जाएँगे। वे लोग जिन पर ख़ुदा का ग़ुस्सा और जो सज़ा के लायक़ होंगे, उन्हें नरक में डाला जाएगा, जो कि आग और यातना का ठिकाना है।

''और जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है कि हम पर क़ियामत की घड़ी नहीं आएगी। कह दो, क्यों नहीं ? मेरे ग़ैब की जानकारी रखनेवाले रब की क़सम, वह तो तुम पर आकर रहेगी। उससे कणभर भी कोई चीज़ न तो आकाशों से ओझल है और न धरती में, और न कण से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी। सब कुछ एक किताब में दर्ज है। ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए। उन्हीं के लिए क्षमा ओर बड़ा अच्छा रिज़्क़ है। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए ज़ोर लगाया, उनके लिए सख्त क़िस्म का दर्दनाक अज़ाब है।'' -

(कुरआन 34:3-5)

मौत के बाद की ज़िन्दगी को मानने की ज़रूरत

मौत के बाद की ज़िन्दगी यानी आख़िरत पर ईमान लाना, सारे नबियों की शिक्षाओं का एकआवश्य हिस्सा रहा है और मुसलमान होने के लिए यह एक जरूरी शर्त है। जब हमसे कुछ करने को कहा जाता है तो स्वाभाविक तौर पर हम उस काम की क़ीमत और उसके फ़ायदे के बारे में सोचते हैं।

हम किसी बेकार काम को करना अनावश्यक समझते हैं, और उस काम को करने में अपना क़ीमती वक़्त ख़राब करने को तैयार नहीं होते। इसी तरह, किसी हानि कारक वस्तु को नज़र अन्दाज़करने के लिए भी हम तैयार नहीं होते। किसी चीज़के फ़ायदेमन्द होने में हमारा जितना गहरा यक़ीन होगा, उसके लिए रद्दे-अमल भी उतना ही तीव्र होगा। और जितना ज़्यादा हमें उसके फ़ायदेमन्द होने में शक होगा, उतनी ही ज़्यादा झिझक और कमज़ोरी हमारे रवैये में देखने को मिलेगी। आख़िर क्या वजह है कि बच्चा अपना हाथ आग में डाल देता है? इसलिए कि उसे यह नहीं पता कि आग जलाती है। वह पढ़ाई से क्यों भागता है? क्योंकि उसे शिक्षा के महत्त्व और उसके फ़ायदों की पूरी तरह जानकारी नहीं होती।

आख़िरत पर ईमान इनसानों को तीन हिस्सों में बाँट देता है

सबसे पहले वे लोग आते हैं जो आख़िरत में यक़ीन नहीं रखते और समझते हैं कि इस दुनिया की ज़िन्दगी ही बस ज़िन्दगी है और वक़्त के अलावा कोई चीज़नहीं जो इसे ख़त्म कर दे। स्वभवतः वे समझते हैं कि अच्छाई वह है जिसमें अपनी इच्छानुसार लाभ हासिल हो और बुराई वह है जिसमें अपनी इच्छानुसार लाभ प्राप्त न हो।

दूसरे लोग वे हैं जो आख़िरत का इनकार तो नहीं करते, लेकिन अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए किसी की सिफ़ारिश और प्रायश्चित के अकीदे पर निर्भर रहते हैं। उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने-आप को 'ख़ुदा का पसन्दीदा बन्दा' समझते हैं। वे समझते हैं कि हमें सज़ा नहीं मिलेगी क्योंकि हम अल्लाह के चयनित बन्दे हैं। अगर सज़ा मिलि भी तो वह सज़ा नाम मात्र की ही होगी, चाहे उनके गुनाह कितने ही संगीन क्यों न हों। इस धारणा के नतीजे में उन्हें कोई नैतिक फ़ायदा नहीं पहुँचता जो आख़िरत के दिन उनके कुछ काम आए। इस प्रकार हम देखते हैं कि उनका व्यवहार भी बिल्कुल वैसा ही हो जाता है जैसा आख़िरत का इनकार करनेवालों का होता है।

तीसरी तरह के लोग वे होते हैं जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं और यह समझकर अपने आपको सत्य मार्ग से भटका नहीं लेते कि उनका ख़ुदा से कोई ख़ास रिश्ता है या कोई अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करके उन्हें बचा लेगा। वे अपने कर्म के प्रति अपने आपको अल्लाह के सामने जवाबदेह समझते हैं। और आख़िरत में उनका ईमान उनके लिए एक बड़ी नैतिक शक्ति बन जाता है। जिसके नतीजे में, एक ऐसा सुरक्षा कवच उन्हें मिल जाता है जो हमेशा उनके साथ लगा रहता है और जब कभी वे सत्य मार्ग से हटते हैं, उन्हें डराता और चेतावनी देता है। कोई अदालत नहीं जो उन्हें पकड़े, कोई पुलिस नहीं जिसका डर उन्हें हो, कोई समाज नहीं जिसका दबाव उन पर हो लेकिन इसके बावजूद, उनके अन्दर का यह सुरक्षा कवच हमेशा सचेत और सक्रिय रहता है जो उन्हें सीमोल्लंघन करने से बचाने के लिए तैयार रहता है। दिल में आख़िरत के इस ख़याल के होने से इनसान मना किए गए कार्यो को करने से डरता रहता है। क्या उन्हें दुनिया की हवस और लालच के आगे हार मान लेनी चाहिए और ख़ुदा के बनाए हुए क़ानूनों का उल्लंघन करना चाहिए? (नहीं, अगर कभी ऐसा होता है तो वे) सच्ची तौबा के लिए हमेशा तैयार रहते हैं और भविष्य में फिर कोई ग़लती न करने का पक्का इरादा करते हैं। एक इनसान जिसका सारा ज़ोर इस दुनिया की कामयाबी और नाकामी पर होता है, उसकी सारी तवज्जोह इस जीवन में उसे मिलने वाले फ़ायदे व नुक़सान पर ही होगी। उसको कोई भी ऐसा काम करने में मज़ा नहीं आएगा जिसमें कोई दुनियावी फ़ायदा न हो। इसी तरह वह किसी भी ऐसे बुरे काम को करने से नहीं रुकेगा जिससे उसे दुनिया में कोई नुक़सान न हो।

इसके विपरीत, एक इनसान जो मौत के बाद की ज़िन्दगी में यक़ीन रखता है, वह दुनिया के सारे फ़ायदों और नुक़सानों को वक़्ती समझेगा और क्षणिक लाभ की ख़ातिर हमेशा रहनेवाले परमसुख को दाव पर नहीं लगाएगा। आख़िरत का यक़ीन इनसान में अच्छे और नेक काम करने की कामना को परवान चढ़ाता है और बुरे कामों से रोकता है। चाहे दुनिया में इसके लिए कितनी भी क़ीमत चुकानी पड़े।

"क्या वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ कमाई हैं, यह समझ बैठे हैं कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए कि उनका जीना और मरना समान हो जाए? बहुत ही बुरे हुक्म हैं जो ये लोग लगाते हैं। अल्लाह ने तो आकाशों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया और इसलिए किया कि हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाए। लोगों पर ज़ुल्म हरगिज़ न किया जाएगा"।

(कुरआन 45:21-22)

दो तरह के लोगों की जीवन-शैली में बड़ा फ़र्क़ होता है। एक का नज़रिया तो यह होता है कि अच्छे काम सिर्फ़ इस ज़िन्दगी तक ही सीमित रहते हैं, मिसाल के तौर पर, माल, दौलत, शोहरत या इसी तरह की किसी और चीज़का फ़ायदा जिससे इनसान को समाज में एक मक़ाम इज़्ज़त,ताक़त या दुनियावी ख़ुशी हासिल हो। इस तरह की चीज़ें इनसान की ज़िन्दगी का मक़सद बन जाती है और फिर ये चीज़ें इनसान को ग़लत और बुरे तरीक़े अपनाने से भी नहीं रोकती। इसके विपरीत, मुसलमान के लिए हर वह चीज़ जिससे ख़ुदा राज़ी होता है, अच्छी होती है, और हर वह चीज़जो उसे यानी ख़ुदा को नाराज़ करती हो या उसके गुस्से को बढ़ाती हो, बुरी होती है। एक अच्छा काम मुस्लिम के लिए हमेशा अच्छा ही रहता है चाहे उससे संसार में कोई फ़ायदा न हो। मुस्लिम को हमेशा यक़ीन होता है कि ख़ुदा उसे हमेशा की रहनेवाली ज़िन्दगी में इसका बदला ज़रूर देगा और वही असल कामयाबी होगी। इसी तरह, वह संसार के कुछ फ़ायदों के लिए बुराइयों का शिकार नहीं होगा, क्योंकि वह जानता है कि भले ही वह इस छोटी सी दुनियावी ज़िन्दगी में सज़ा से बच जाए लेकिन उसे ख़ुदा को जवाब देना है।